卐 श्री हनुमते नमः 卐

श्री हनुमान चालीसा

شری ہنومان چالیسہ

प्रकाशकः
किशोर सपलाई सन्डिकेट
गणपतयार, श्रीनगर।

❋ दोहा ❋

श्री गुरु चरण सरोजरज, निज मन मुकुर सुधार।
बरनौं रघुबर बिमल यश, जो दायक फल चार॥
बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमिरौं पवनकुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार॥

شری گورو چرن سروج رج ، نج من مکر سدھار
برنوں رگھوبر بمل یش ، جو دایک پھل چار

بُدھی ہِین تنو جانِ کے، سُمِروں پَون کُمار -
بَل بُدھی وِدیا دیہو موہیں، ہَرہو کلیش بِکار -

══ चौपाई ══ چوپائی ══

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
جے ہنومان گیان گُن ساگر - جے کپیس تِہوں لوک اُجاگر

रामदूत अतुलित बल धामा ।
अंजनि-पुत्र पवन-सुत नामा ॥
رام دُوت اَتولت بَل دھاما - اَنجنی پُتر پَون سُت ناما

महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥
مہابیر بِکرم بجرنگی - کُومتی نِوار سُومتی کے سنگی

कंचन बरण बिराज सुबेशा ।
कानन कुंडल कुंचित केशा ॥
کنچن بَرن بِراج سُبیشا - کانن کُنڈل کُنچت کیشا

हाथ बज्र औ ध्वजा विराजै ।
कांधे मूंज जनेऊ साजै ॥
ہاتھ بجر او دھوجا بِراجے - کاندھے مُونج جنیئو ساجے

शंकर-सुवन केशरी-नन्दन।
तेज प्रताप महा जग-वंदन॥
شنکر سوون کیشری نندن، تیج پرتاپ مہا جگ وندن

विद्यावान गुणी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥
ودیاوان گنی اتی چاتر، رام کاج کربے کو آتر

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लषण सीता मन बसिया॥
پربھو چرتر سنبے کو رسیا، رام لشن سیتا من بسیا

सूक्ष्म रूपधरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लंक जरावा॥
سوکھشم روپ دھر سیہیں دکھاوا، وکٹ روپ دھر لنک جراوا

भीम रूप धरि असुर संहारे।
राम चन्द्र के काज संवारे॥
بھیم روپ دھر اسر سنہارے، رام چندر کے کاج سنوارے

लाय सजीवन लषन जियाये।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये॥
لائے سجیون لشن جیایے، شری رگھوبیر ہرشی ار لایے

रघुपति कीनी बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरत सम भाई॥
رگھوپتی کینی بہت بڑائی ، تم مم پریہ بھرت سم بھائی

सहस बदन तुम्हरो यश गावैं।
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं॥
سہس بدن تمہرو یش گاویں ، اس کہی شری پتی کنٹھ لگاویں

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा।
नारद शारद सहित अहीशा॥
سنکادک برہمادی منی شا ، نارد شارد سہت اہیشا

यम कुबेर दिक्पाल जहाँ ते।
कवि कोविद कहि सकैं कहाँ ते॥
یم کبیر دکپال جہاں تے ، کوی کووِد کہہ سکیں کہاں تے

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥
تم اپکار سگریوہیں کینہا ، رام ملائے راج پد دینہا

तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना।
लंकेश्वर भये सब जग जाना॥
تمہرو منتر وبھیشن مانا ، لنکیشور بھیئے سب جگ جانا

युग सहस्र योजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥
یگ سہستر یوجن پر بھانو، لیلیو تاہی مدھر پھل جانو

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥
پربھو مُدریکا میلی مکھ ماہیں، جلدھی لانگھ گئے اچرج ناہیں

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
دُرگم کاج جگت کے جیتے، سُگم انوگرہ تمہرے تیتے

राम दुवारे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिन पैसारे॥
رام دُوارے تم رکھوارے، ہوت نہ آگیا بن پیسارے

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डरना॥
سب سکھ لہے تمہاری سرنا، تم رکشک کاہو کو ڈرنا

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक ते काँपै॥
آپن تیج سمہارو آپیں، تینوں لوک ہانکتے کانپیں

भूत पिशाच निकट नहिं आवैं।
महाबीर जब नाम सुनावैं॥
بھوت پشاچ نکٹ نہیں آویں، مہابیر جب نام سناویں

नाशै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा॥
ناشے روگ ہرے سب پیرا، جپت نرنتر ہنومت بیرا
संकट से हनुमान छोड़ावैं।

मन क्रम बचन ध्यान जो लावैं॥
سنکٹ سے ہنومان چھوڑاویں، من کرم بچن دھیان جو لاویں

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिनके काज सकल तुम साजा॥
سب پر رام تپسوی راجا، تن کے کاج سکل تم ساجا
और मनोरथ जो कोइ लावै।
तासु अमित जीवन फल पावै॥
اور منورتھ جو کوئی لاوے، تاسو امت جیون پھل پاوے
चारहु युग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा॥
چارہو یگ پرتاپ تمہارا، ہے پرسدھ جگت اجیارا

साधु संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे॥
سادھو سنت کے تم رکھوارے، اسر نکندن رام دُلارے

अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता॥
اشٹ سدھی نو ندھی کے داتا، اس بر دین جانکی ماتا

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा॥
رام رساین تمہرے پاسا، سدا رہو رگھوپتی کے داسا

तुम्हरे भजन राम को भावै।
जन्म जन्म के दुख बिसरावै॥
تمہرے بھجن رام کو بھاوے، جنم جنم کے دکھ بسراوے

अन्तकाल रघुपति पुर जाई।
जहाँ जन्मि हरि भक्त कहाई॥
انت کال رگھوپتی پور جائی، جہاں جنمی ہری بھکت کہائی

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई॥
اور دیوتا چت نہ دھرئی، ہنومت سیئی سرو سکھ کرئی

संकट हरै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बल बीरा॥
سنکٹ ہرے [illegible] پیرا، جو سمرے ہنومت بل بیرا

जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥
جے جے جے ہنومان گوسائیں، کرپا کرہو گورو دیو کی نائیں

यह शत बार पाठ कर जोई ।
छूटहि बन्दि महा सुख होई ॥
یہ شت بار پاٹھ کر جوئی، چھوٹہی بندی مہا سکھ ہوئی

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
جو یہ پڑھے ہنومان چالیسہ، ہوئے سدھی ساکھی گوری سہ

तुलसी दास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥
تلسی داس سدا ہری چیرا، کیجے ناتھ ہردے مہہ ڈیرا

॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लषन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ।
پون تنے سنکٹ ہرن، منگل مورتی روپ،
رام لکھن سیتا سہت، ہردے بسہو سر بھوپ"

پبلیشر: پرکشو رسیلانی عینک بیچٹ گنپت یار سرینگر کشمیر
कातिब: पृथ्वी नाथ "सायिल" * کاتب: پرتھوی ناتھ سائل کشمیری